अतिरिक्त भाग

पुराने नियम के वचन कैसे पूरे हुए थे

हम में से अधिकतर लोग जब भविष्यवाणी के पूरा होने की बात पर विचार करते हैं, तो हमारा ध्यान पुराने नियम की उस स्पष्ट भविष्यवाणी पर जाता है, जो नये नियम में उसी रूप में पूरी हुईं। परन्तु बाइबल अक्सर ''पूरा हुआ'' का इस्तेमाल व्यापक अर्थ में करती है। जे. डब्ल्यू मैज़र्वे ने अपनी पुस्तक *द फोरफोल्ड गॉस्पल* में ज़ोर दिया है कि पुराने नियम के वचन नये नियम में कम से कम चार तरह से पूरे हुए। उसने हर ढंग के मज़ी की पुस्तक के पहले भाग में पाए जाने वाले पदों से समझाया।[1]

पहले ढंग का उल्लेख हमने ऊपर किया है। इसे ''सीधे'' पूरा होना कहा जा सकता है, जब पुराने नियम की कोई स्पष्ट भविष्यवाणी (एक ही बार पूरी होना) नये नियम में पूरी होती है। मज़ी 2:5, 6 इस प्रकार की भविष्यवाणी और इसके पूरा होने का एक उदाहरण है। यरूशलेम के धार्मिक अगुवे यह पूछे जाने पर कि मसीहा का जन्म कहां होना था, मीका 5:2 उद्धृत करके उज़र देते थे:

> यहूदिया के बैतलहम में। ज़्योंकि, भविष्यवज़्ता के द्वारा यों लिखा गया है, ''हे बैतलहम, जो यहूदा के देश में है, तू किसी रीति से, यहूदा के अधिकारियों में सबसे छोटा नहीं। ज़्योंकि तुझ में से एक अधिपति निकलेगा, जो मेरी प्रजा इस्राएल की रखवाली करेगा।''

बैतलहम में यीशु का जन्म होने पर, यह भविष्यवाणी हमेशा-हमेशा के लिए पूरी हो गई थी।

पुराने नियम के वचन नये नियम की उन महत्वपूर्ण घटनाओं के द्वारा, जो पुराने नियम के शज़्दों या घटनाओं में दिखाए गए थे पूरे होने का एक और ढंग था। मज़ी 2:15 इस प्रकार की भविष्यवाणी को दिखाता है। वहां लिखा है, ''... इसलिए कि वह वचन जो प्रभु ने भविष्यवज़्ता के द्वारा कहा था कि मैंने अपने पुत्र को मिस्र से बुलाया पूरा हो।'' यह उद्धृत पद होशे 11:1 है, जो इस्राएल की सन्तान के मिस्र की दासता से बाहर आने की बात करता है: ''जब इस्राएल बालक था, तब मैंने उससे प्रेम किया, और अपने पुत्र को मिस्र से बुलाया।'' परमेश्वर के इस्राएलियों को निकालने में बालक यीशु की परमेश्वर द्वारा सुरक्षा करने की तस्वीर थी।

मत्ती 2:18, जो यिर्मयाह 31:15 से लिया गया है, इस दूसरी तरह के पूरे होने का एक और उदाहरण है। पुराने नियम के पद में बाबुल की दासता की त्रासदी से होने वाले शोक को दिखाया गया था। भविष्यवक्ता के शब्द नवजन्मे राजा को नाश करने के हेरोदेस के प्रयास में बच्चों की हत्या के समय, बैतलहम में होने वाली त्रासदी से फैले शोक के चित्र के रूप में समान रूप से उपयुक्त थे।

पुराने नियम की घटना में एक तीसरा ढंग, जिसका वर्णन कुछ अधिक ही बढ़ाकर दिखाया गया एक तीसरा ढंग है। नये नियम की अधिक स्पष्ट भाषा उपयुक्त घटना में लागू की गई है। मत्ती 1:22, 23 इसी श्रेणी में आता है:

> यह सब कुछ इसलिए हुआ कि जो वचन प्रभु ने भविष्यवक्ता के द्वारा कहा था वह पूरा हो। कि, देखो एक कुंवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र जनेगी और उसका नाम इम्मानुएल रखा जाएगा जिस का अर्थ यह है ''परमेश्वर हमारे साथ।''

यशायाह 7:1–16 को देखने पर आप पाएंगे कि प्रतिज्ञा मूलत: छुटकारे के सम्बन्ध में आहाज़ को दी गई प्रतिज्ञा के एक चिह्न के रूप में थी। यह प्रतिज्ञा *आंशिक तौर पर* आहाज़ के समय में पूरी हुई; परन्तु, परमेश्वर की प्रेरणा से, मत्ती ने कहा कि *अन्तिम रूप में* इसका पूरा होना यीशु में ही था।

अन्त में, ''भविष्यवाणी'' कई बार एक विशेष पद में नहीं, बल्कि पुराने नियम की सामान्य शिक्षा में मिलती है, जो नये नियम की घटना में पूरी हुई है। मत्ती 2:23 इसी श्रेणी में आता है। यूसुफ यीशु को नासरत नगर में वापस ले आया, ताकि ''जो वचन प्रभु ने भविष्यवक्ताओं के द्वारा कहा था, वह पूरा हुआ कि वह नासरी कहलाएगा।'' यहां मुख्य शब्द ''भविष्यवक्ताओं'' (बहुवचन) है। यह एक भविष्यवक्ता द्वारा नहीं बल्कि कई भविष्यवक्ताओं की शिक्षा में था। यीशु के ''नासरी'' कहे जाने और पुराने नियम की भविष्यवाणी के सामान्य शब्द में हम क्या सम्बन्ध जोड़ सकते हैं? नासरत नये नियम के समय का एक *तुच्छ* सा नगर था (यूहन्ना 1:46), मसीह *तुच्छ* समझा जाना था और ठुकराया जाना था (भजन संहिता 22:6–8; 69:8, 20, 21; यशायाह 49:7; 53:2, 5, 8; दानिय्येल 9:26[2])। अन्य शब्दों में, मत्ती 2:23 में ''नासरी'' के लिए आप ''तुच्छ समझा गया'' पढ़ सकते हैं।

इन चारों ढंगों में से हो सकता है कि कोई ढंग ''पूरा होना'' ही हमारी परिचित भाषा से मेल न खाए। तो भी यह समझना आवश्यक है कि यहूदियों द्वारा इन सभी पूरा होने की बातों को सही माना जाता था, जो मत्ती समझने की कोशिश कर रहा था।

शब्दों का खेल ''पूरा होना'' के लिए अंग्रेज़ी शब्द ''fulfillment'' के सम्बन्ध में एक अच्छा उदाहरण है:[3] नये नियम का पूरा होना पुराने नियम के हवाले का मूल *पूरा भरा* था– और इसका अर्थ था कि इसका अर्थ यह हो सकता है और होना चाहिए।

नोट्स

याद रखें कि हम इस बात पर चर्चा कर रहे हैं कि *परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए* नये नियम के लेखकों ने किस प्रकार यह प्रकट किया कि पुराने नियम के वचन पूरे हो चुके थे। ज़्योंकि मैं और आप परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए शिक्षक नहीं हैं, इसलिए हमें किसी घटना की ओर इशारा करके यह कहने का अधिकार नहीं है कि ''यह उस या इस वचन का पूरा होना है।'' पुराने नियम के किसी वचन की घटना के पूरे होने का हमें तभी *पता* चल सकता है, जब *बाइबल* बताए।

इस लेख की जानकारी अपने छात्रों को देने या न देने का निर्णय आप स्वयं लें। ज़्योंकि इससे कुछ छात्र उलझ सकते हैं; वे इतना जानने के लिए संतुष्ट हो सकते हैं कि परमेश्वर की प्रेरणा पाए लेखकों ने कहा था कि पुराने नियम का वचन पूरा हो चुका है। मैंने यह अतिरिज़्त लेख इस पुस्तक में इसलिए शामिल किया, ज़्योंकि एक शिक्षक के रूप में अध्ययन जारी रखने के लिए, *आपको* इसकी आवश्यकता पड़ेगी। मैं हमेशा किसी पुराने नियम की घटना के पूरा होने को फिर से समझाने के लिए रुकता नहीं हूं, परन्तु इस अतिरिज़्त लेख में दिए गए वर्गों से आप हर भविष्यवाणी के पूरा होने की तुलना कर सकते हैं। इसके अलावा, आपको समय-समय पर पुराने नियम के किसी पद के नये नियम में पूरा होने की विशेष घटना के बारे में पूछे जाने पर इस जानकारी की आवश्यकता हो सकती है।

टिप्पणियां

[1]जे. डज़्ल्यू. मैज़्गर्वे एण्ड फिलिप वाई. पैंडलटन, द *फोरफोल्ड गॉस्पल ऑर ए हारमनी ऑफ़ द फोर गॉस्पल्स* (सिंसिनटी: स्टैण्डर्ड पज़्लिशिंग कं., 1914), 25, 51-55. [2]कई बार इस सूची में यशायाह 11:1 को जोड़ा जाता है। यशायाह 11:1 में ''डाली'' के लिए इब्रानी शज़्द ''नासरी'' शज़्द जैसे व्यंजनों की तरह ही है। [3]यद्यपि इसमें अंग्रेज़ी शज़्द का इस्तेमाल किया गया है, परन्तु शज़्दों का यह खेल यूनानी शज़्द के अनुवाद ''fulfill'' के साथ अन्याय नहीं है। उस शज़्द का मूल ''भरना'' के लिए शज़्द है।

नये नियम की भविष्यवाणियां जिन्हें हम देख सकते हैं

भविष्यवाणी	*में भविष्यवाणी की गई*	*पूरी हुई*
एक स्वर्गदूत ने कहा कि यीशु महान होगा और परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा।	लूका 1:32-35	एक निर्धन जवान स्त्री से एक छोटे से गांव में जन्म लेने के बावजूद, यीशु परमेश्वर के महान पुत्र के रूप में जाना जाता है।
मरियम ने कहा कि युग-युग के लोग मुझे धन्य कहेंगे।	लूका 1:48	मरियम को आज भी धन्य कहा जाता है।
यीशु ने भविष्यवाणी की कि कुछ लोग उस मार्ग में प्रवेश करेंगे, जो जीवन तक पहुंचाता है।	मत्ती 7:13, 14	सच्चे विश्वास करने वाले आज भी कम ही हैं।
यीशु ने भविष्यवाणी की कि वह सुलैमान से बड़ा है।	मत्ती 12:42	इतिहास से यह बात सिद्ध हो गई है।
यीशु ने भविष्यवाणी की कि अधोलोक कलीसिया पर प्रबल न होगा।	मत्ती 16:18	उसकी कलीसिया का अस्तित्व आज भी है।
यीशु ने कहा कि जहां भी सुसमाचार का प्रचार होगा, वहां उस स्त्री का जिसने उसके सिर पर तेल उण्डेला था, वर्णन भी हो।	मत्ती 26:13	आज तक जहां कहीं भी सुसमाचार का प्रचार होता है वहां उस स्त्री का वर्णन किया जाता है।
यीशु ने कहा कि उसके वचन कभी नहीं टलेंगे।	मत्ती 24:35	उसका वचन युगों से कायम है।
यीशु ने कहा कि सब जातियों में सुसमाचार का प्रचार किया जाएगा।	मरकुस 13:10; लूका 24:47	आज भी यह सब जातियों में सुनाया जा रहा है।
यीशु ने कहा कि मैं सब मनुष्यों को अपने पास खींचूंगा, जिसका अर्थ सब जातियों को खींचना था।	यूहन्ना 12:32	सब जातियों के लोग यीशु की ओर खिंचे जाते हैं।

ओवन ऑलब्रिट द्वारा संकलित

मरियम पर प्रचार करना

परिचायक सामग्री

कैथोलिक चर्च मरियम पर आवश्यकता से अधिक ही ज़ोर देता है, जबकि दूसरी ओर प्रोटेस्टैंट डिनोमिनेशनें आम तौर पर उस पर उतना ज़ोर नहीं देतीं जितना देना चाहिए। पवित्र शास्त्र यह नहीं सिखाता कि मरियम की उपासना की जाए, परन्तु निश्चित रूप से उसका सम्मान करना हमारा फ़र्ज़ है। आखिर, संसार की इतनी स्त्रियों में से, वही तो थी, जिसे परमेश्वर ने हमारे प्रभु की माता बनने के लिए चुना था! मसीह की कलीसिया के लिए आवश्यक है कि वह सकारात्मक और नकारात्मक दोनों रूपों में, मरियम पर सिखाने और प्रचार करने का कार्य करे।

शृंखला के इस भाग के लिए अपनी खोज से पूर्व मैंने सोचा भी नहीं था कि मरियम पर बाइबल में इतनी कम जानकारी उपलब्ध है। यीशु के जन्म और शैशवकाल की कहानी के अलावा उसका उल्लेख सुसमाचार की पुस्तकों में कहीं-कहीं है (यूहन्ना 2:1-12; मत्ती 12:46-50 [मरकुस 3:21, 31-35; लूका 8:20, 21 भी देखें]; मत्ती 13:55 [मरकुस 6:3; यूहन्ना 6:42 भी देखें]; यूहन्ना 19:25-27), प्रेरितों के काम के आरम्भ में एक बार (प्रेरितों 1:14) है परन्तु पत्रियों में तो एक बार भी नहीं।[1] उसके बारे में हमें अधिकतर जानकारी, लूका 1 अध्याय से ही मिलती है। तो भी इससे कई पाठ और प्रवचन तैयार किए जा सकते हैं। नीचे दिए गए नोट्स और प्रवचन से कई विचार और ढंग मिल सकते हैं।

''मेरे प्रभु की माता''

मरियम पर आगे आपको एक प्रवचन मिलेगा। मरियम के बारे में जानने के लिए संघर्ष करते हुए मैंने अन्ततः उसके सम्पूर्ण जीवन की समीक्षा करने का विचार किया। इससे उसके जीवन की समीक्षा इस प्रकार की जा सकती: (1) मरियम, चुनी हुई (मेरे प्रभु की माता होने के लिए चुनी गई); (2) मरियम, ज़रूरत के समय दी गई सहायता (यीशु का पालन-पोषण करने की ज़िम्मेदारी उसे दी गई); (3) मरियम, ढूंढ़ने वाली (हमेशा अपने पुत्र की चिंता में); (4) मरियम, उदास (क्रूस के समय); (5) मरियम, उद्धार पाई हुई (यरूशलेम में चेलों के साथ)।

उसे ''धन्य'' कहो

पुस्तक में आगे मरियम को ''धन्य'' *ज़्यों* कहना चाहिए पर केन्द्रित मरियम पर

प्रवचन की सामग्री का परिचायक बनाया जा सकता है। यह लूका 1 अध्याय में उसके बारे में कही गई बातों पर केन्द्रित हो सकता है। इसमें आप समझा सकते हैं कि मसीह के जीवन पर शृंखला में मरियम के बारे में जो कुछ कहा गया है, आप सबको बताएंगे।

आपको लग सकता है कि मरियम के बारे में पवित्र शास्त्र में बताई गई बातों पर चर्चा करने से पहले उसके सम्बन्ध में झूठे या गलत विचारों को साफ कर लें। यदि यह बात है तो नीचे दिया गया ढंग इस्तेमाल किया जा सकता है।

असली मरियम

संसार के सचमुच में विशेष लोगों में से एक यीशु की माता, मरियम है। लूका 1:48 के अनुसार, हर पीढ़ी यह माने कि उसे परमेश्वर की ओर से धन्य ठहराया गया है। ऐसा हुआ नहीं है कि हर पीढ़ी में उसे धन्य माना गया हो, परन्तु शायद उस पर हमारे अध्ययन से हमें इस कमी को दूर करने में सहायता मिल सके। परन्तु यह समझने से पहले कि परमेश्वर ने मरियम को क्यों चुना, हमें यह पूछ लेना आवश्यक है कि ''हम कौन सी मरियम की बात कर रहे हैं?''

बहुत साल पहले अमेरिका में एक टीवी शो होता था, जिसका नाम ''टू टैल द ट्रुथ'' था। हर बार कार्यक्रम में, तीन लोग होते थे, जो एक ही व्यक्ति होने का दावा करते थे, जिसने कोई प्रसिद्ध काम किया होता था। जज तीनों से प्रश्न पूछते और फिर अनुमान लगाते कि कौन सच बोल रहा है। कार्यक्रम के अन्त में, वाचक कहता था, ''क्या *असली* [व्यक्ति का नाम] खड़ा होगा?''

उस शो के रूपक का इस्तेमाल करते हुए, जजों के सामने तीन महिलाओं की कल्पना करें, जिन में से हर एक मरियम होने का दावा कर रही है। पहली औरत उठती है, जो सफेद रंग और सुन्दर टोपीनुमा बालों वाली, शाही लिबास पहने एक सर्वांग सुन्दर महिला है। उसके सिर पर एक गोल प्रकाश है और वह लोगों को आशीष देते हुए अपना दायां हाथ उठाती है। आत्मविश्वास से भरी वह कहती है ''मैं मरियम हूं, यीशु की माता।'' यह वही मरियम है, जिसे अधिकतर धार्मिक तस्वीरों में दिखाया जाता है और जिसे बहुत से लोग स्वप्नों में देखने का दावा करते हैं। जजों का अधिकतर भाग अर्थात धार्मिक जगत का महत्वपूर्ण भाग पुकारता हुआ कहता है, ''हां, हां यही है! मरियम यही है!''

फिर बुर्का पहने दुबल-पतली स्त्री उठती है। उसकी आवाज़ इतनी धीमी है कि जब वह बात करती है, तो लोगों को ध्यान लगाकर सुनना पड़ता है, ''मैं मरियम हूं, मैं यीशु की माता हूं।'' कुछ लोग शोर मचाते हैं, ''बाइबल वाली मरियम *यही* है।'' कम से कम, यह वही मरियम है, जिसे हम में से कुछ लोग जानते हैं।

अन्त में, तीसरी स्त्री खड़ी होती है। यह भूरे रंग, काले बाल और गहरी आंखों वाली एक पलिश्तीनी यहूदी स्त्री है। उसने एक साधारण देहाती महिला वाले वस्त्र पहने हैं, परन्तु उसका रौब एक मर्यादित स्त्री वाला है। उसे देखकर लगता है कि उसने जीवन में बहुत पीड़ा और बहुत आनन्द पाया है। विनम्रतापूर्वक वह दावा करती है, ''मैं मरियम हूं, यीशु की माता।''

''असली मरियम है ? वह खड़ी हो जाए।''

उसे ''धन्य'' कहने से पहले हमें यह निर्णय कर लेना चाहिए कि असली मरियम कौन थी। यह निर्णय कर लेने के बाद हम उन गुणों का पता लगा सकते हैं, जिनसे वह विशेष बनी है। मुझे आशा है कि मरियम पर इस और अगले प्रवचन के बाद, हम में से हर कोई मरियम को उस सब के लिए जो वास्तव में वह थी, सराहेंगे, न कि उस सब के लिए जो लोगों को लगता है कि वह थी।

इस पहले अध्ययन में, मैं ''असली मरियम को सामने लाने'' का प्रयास करूंगा। संसार के बहुत से भागों में, सुन्दर रंगीन कागज़ में पैक कर के और रिबन बांधकर उपहार दिए जाते हैं। उपहार को निकालने के लिए, पैंकिग को खोलना आवश्यक होता है। (मैं अपने दिमाग में अपने पोते-पोतियों को उन्हें मिले उपहारों को निकालने के लिए पैकिंगों को जल्दी-जल्दी उतारने की कल्पना करता हूं।) उसके बाद, उस पैकिंग को आम तौर पर फैंक दिया जाता है।

वर्षों से, लोग मरियम को ऐसे अनेक विश्वासों में पैक करते आ रहे हैं, जो पवित्र शास्त्र में नहीं मिलते। ऐसा वे उसे सज़्मान देने के लिए करते हैं, परन्तु इसका परिणाम यह हुआ है कि असली मरियम गुम हो गई है। मैं इन पैकिंगों या लपेटनों को एक-एक करके उतारना चाहता हूं। यदि आपको सिखाया गया है कि मरियम का सज़्मान करना चाहिए, तो याद रखें कि मैं मनुष्यों द्वारा बनाई गई पैकिंग को उतारूंगा। मेरी कोई भी बात मरियम की शान के विरुद्ध नहीं है। मैं आपको यकीन दिलाता हूं उन लपेटनों को उतारने से उस पैकिंग के अन्दर का उपहार बिल्कुल सुरक्षित रहेगा। वास्तव में, किसी उपहार को निहारने का एकमात्र ढंग पैकिंग को खोलकर देखना ही है।

शारीरिक कल्पना की शिक्षा

मरियम पर नवीनतम पैकिंग शारीरिक कल्पना की शिक्षा है।[2] 1950 में एक बुल[3] में घोषित इस शिक्षा का दावा है कि पृथ्वी पर अपने जीवन के अन्त में, मरियम देह और प्राण सहित, स्वर्ग में ऊपर उठा ली गई थी। इस शिक्षा की दो बातें गलत हैं: पहली, यह बाइबल की शिक्षा नहीं है।[4] दूसरी, वास्तव में बाइबल इसके विपरीत सिखाती है। यीशु ने दावा किया था कि ''कोई स्वर्ग पर नहीं चढ़ा, केवल वही जो स्वर्ग से उतरा, अर्थात् मनुष्य का पुत्र जो स्वर्ग में है'' (यूहन्ना 3:13)।[5] पहली पैकिंग उतार दीजिए।

निष्पाप अवधारणा की शिक्षा

दूसरी लपेटन जो हमें मिलती है, वह उसके निष्पाप होने की अवधारणा है। यह शिक्षा जो बिल्कुल नई है, चौथी और पांचवीं शताब्दी के लेखों में अस्पष्ट रूप में पाई जाती थी, परन्तु 1854 तक इसकी कोई व्याख्या नहीं की गई थी। यह ''टोटल हेयरडिटरी डिप्रेविटी'' की शिक्षा का परिणाम है, जिसके अनुसार आदम के पाप का दोषी होने के कारण लोग ''पूर्ण वंशानुगत भ्रष्टता'' अर्थात जन्म के समय से ही आदम के पाप के दोषी होते हैं। विश्वास से

फिर जाने वाली कलीसिया हेयरडिटरी डिप्रेविटी या जन्म के समय सब में आदम का पाप होने की शिक्षा देती थी, परन्तु कलीसिया के पुरोहिततन्त्र को यह बात पसन्द नहीं थी कि मरियम का जन्म आदम के पाप के साथ हुआ था। इस कारण वे यह दावा करते थे कि मरियम के गर्भ में आने पर एक चमत्कार हुआ था और वह चमत्कार यह था कि वह गर्भ में ''निष्पाप'' गर्भ में आई थी[6] और इसलिए उसका जन्म ''पाप में'' नहीं हआ था।

मुझे इस विचार से कोई आपज़ि नहीं है कि मरियम जन्म के समय निष्पाप थी, ज़्योंकि बाइबल यही सिखाती है कि *हर* बच्चा जन्म के समय पाप रहित होता है। यीशु ने कहा कि ''स्वर्ग का राज्य'' छोटे बच्चों का ही है (मज़ी 19:14; 18:3 भी देखें)। यहेजकेल नबी ने ज़ोर दिया था कि हम में से हर एक अपने ही पापों के लिए ज़िज़्मेदार है, जिसका अर्थ यह है कि हमें अपने पूर्वजों के पापों का हिसाब नहीं देना पड़ेगा (यहेजकेल 18:20), चाहे वह हमारा ''पिता'' आदम ही हो।

परन्तु विश्वास से फिर जाने वाली कलीसिया ने पापरहित होने के लिए एक कदम आगे बढ़ने की अवधारणा अपनाई। सोलहवीं सदी में, ट्रैंट की सभा ने आधिकारिक तौर पर घोषणा की कि मरियम किसी भी प्रकार के वास्तविक या व्यज़्तिगत पाप से मुज़्त है, अर्थात यह कि उसने अपने जीवन में कभी कोई पाप नहीं किया। यह बात हम नहीं मान सकते। बाइबल बताती है कि संसार का एकमात्र पापरहित मनुष्य यीशु मसीह ही था (1 पतरस 2:22; इब्रानियों 4:15); की हम में से सब ने पाप किया और परमेश्वर की महिमा से रहित हो गए हैं (रोमियों 3:10, 23; 1 यूहन्ना 1:10)। लूका 1 अध्याय में, मरियम ने स्तुति का गीत गाते हुए कहा था, ''और मेरी आत्मा मेरे उद्धार करने वाले परमेश्वर से आनन्दित हुई'' (आयत 47)। *उद्धार करने वाले* की आवश्यकता तो केवल *खोए हुए* को ही होती है; मरियम ने इस बात को समझा कि उसे उद्धार की आवश्यकता है, जैसे हम में से हर एक को होती है। पापरहित सिद्धता की पैकिंग भी फैंकना होगा।

मरियम की उपासना और अर्चना

अब जो तीसरी पैकिंग है, वह मरियम[7] की उपासना और अर्चना[8] की सबसे चमकीली लपेटन (पैकिंग) है। इसमें मरियम की मूर्तियों के सामने प्रार्थना करना और मरियम को ऐसी उपाधियां देना, जो पवित्र शास्त्र के अनुसार बिल्कुल नहीं हैं, जैसे ''परमेश्वर की माता।''[9] मरियम से सहायता के लिए विनती करना और परमेश्वर के सामने हमारी सिफारिश करने की प्रार्थना विशेष रुचि का कारण है। पन्द्रहवीं शताज़्दी में, एव मारिया के साथ ''पवित्र मरियम, परमेश्वर की माता, हमारे लिए प्रार्थना कर'' शज़्द जोड़े गए। इससे मुझे चिंता होती है, ज़्योंकि इन शज़्दों में मरियम के बारे में गलत बातें कही गई हैं। पवित्र शास्त्र हमें यह नहीं सिखाता कि मरियम हमारे और परमेश्वर के बीच मध्यस्थ[10] के रूप में काम करती है। वास्तव में पौलुस ने कहा है कि ''परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी *एक* ही बिचवई है, अर्थात मसीह यीशु जो मनुष्य है'' (1 तीमुथियुस 2:5; 1 यूहन्ना 2:1; प्रेरितों 4:12 भी देखिए)।

मुझे इससे इसलिए भी चिंता होती है, ज़्योंकि यह परमेश्वर के बारे में कुछ झूठी बात है। जब किसी से यह पूछा गया कि उसने मरियम से प्रार्थना ज़्यों की, तो उसका उज़र था, ''यीशु यदि सुनेगा, तो अपनी मां की अवश्य सुनेगा।'' परमेश्वर और यीशु के बारे में यह ज़्या बात है ? इसका अर्थ है कि *वे हमारी नहीं सुनना चाहते हैं,* सो हमें उन्हें प्रभावित करने के लिए किसी और को ढूंढ़ना होगा।[11] परन्तु बाइबल सिखाती है कि परमेश्वर हम से प्रेम करता और हमारी परवाह करता है। ''परमेश्वर प्रेम है'' (1 यूहन्ना 4:8, 16), और ''उसको तुज़्हारा ध्यान है'' (1 पतरस 5:7)। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने ज़ोर देकर कहा है कि यीशु ''हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुखी'' हो सकता है; जिस कारण हम ''अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बांधकर'' आ सकते हैं (इब्रानियों 4:14-16)।[12]

नये नियम में प्रेरितों 1 अध्याय के मरियम के उल्लेख के बाद, कलीसियाओं और मसीही लोगों के नाम लिखी गई सब पत्रियों को मिलाकर, दोबारा उसका नाम नहीं मिलता। जितना ज़ोर आज मरियम पर दिया जा रहा है, उसका उस समय के लेखकों को कोई कारण पता नहीं था। बाइबल की अनुमति के बिना लगाई गई इस सजावट को उतारना होगा।[13]

आदि कुंवारी की शिक्षा

अब हम अन्तिम पैकिंग या लपेटन पर आते हैं। इस लपेटन में इतनी श्रद्धा है कि इसे बड़ी सावधानी से खोलना होगा। बहुत से लोगों के मनों में, यह मरियम का चरित्र है। उन लोगों के लिए, इस शिक्षा को चुनौती देना मरियम पर आक्रमण करने जितना बड़ा पहाड़ है। मैं मरियम के अन्त तक कुंवारी रहने या आदि कुंवारी की शिक्षा की बात कर रहा हूं। यह तह सबसे पुरानी है, फिर भी यह कुछ सौ साल पुरानी ही है ज़्योंकि इसे प्रेरितों द्वारा दी गई नहीं कहा जा सकता। अन्त तक कुंवारी रहने की यह अवधारणा पांचवीं शताज़्दी में अस्पष्ट सी थी और बाद में सातवीं शताज़्दी में आधिकारिक तौर पर इसकी शिक्षा दी जाने लगी।

ऊपरी तौर पर यह शिक्षा काफी सरल लगती है। मरियम के कुंवारी रहने या न रहने से ज़्या फर्क पड़ता है ? फर्क पड़ता है, सबसे पहले तो इसलिए, ज़्योंकि बाइबल उसके कुंवारी रहने की बात नहीं बताती। गर्भधारण करने के समय और यीशु के जन्म तक मरियम कुंवारी ही थी (मज़ी 1:23, 25), परन्तु ऐसा कोई संकेत नहीं है कि वह बाद में भी कुंवारी ही रही। इसके विपरीत पवित्र शास्त्र यह संकेत देता है कि यूसुफ और मरियम ने विवाह का धर्म निज़ाया और मरियम यूसुफ की व्यावहारिक पत्नी थी।[14] मज़ी 1:25 कहता है कि ''*जब तक* वह पुत्र न जनी *तब तक* वह [यूसुफ] उसके पास न गया।'' (मज़ी 1:18 भी देखें।) मज़ी 13:55, 56 हमें बताता है कि यीशु के कम से कम चार भाई और दो बहनें थीं।[15] इस आयत को स्वाभाविक ढंग से समझने का ढंग यही है कि यूसुफ और मरियम बाद में पति-पत्नी के रूप में इकट्ठे रहने लगे और उनके और बच्चे हुए।[16]

मरियम के आदि कुंवारी होने की शिक्षा इसलिए भी भिन्न है, ज़्योंकि यह विवाह और घर के संस्थान को तुच्छ मानते हुए किसी न किसी रूप में यह कहती है कि विवाहित होने की तुलना में अविवाहित रहना पवित्र है। पौलुस ने भविष्यवाणी की थी कि विश्वास से

फिरने वालों की एक ही विशेष बात यह होगी कि पवित्र जीवन बिताने की इच्छा करने वालों को विवाह करने से मना करेंगे:

> ... आने वाले समयों में कितने लोग भरमाने वाली आत्माओं, और दुष्टात्माओं की शिक्षाओं पर मन लगाकर विश्वास से बहक जाएंगे। यह उन झूठे मनुष्यों के कपट के कारण होगा, जिन का विवेक मानो जलते हुए लोहे से दागा गया है। जो ज़्याह करने से रोकेंगे, और भोजन की कुछ वस्तुओं से परे रहने की आज्ञा देंगे; ... (1 तीमुथियुस 4:1-3)।

परन्तु, पवित्र शास्त्र सिखाता है कि विवाह ''सब में आदर की बात समझी जाए, और बिछौना निष्कलंक रहे'' (इब्रानियों 13:4)। यह सिखाना कि मरियम ने विवाह का दायित्व नहीं नहीं निभाया, उसके लिए हमारी अवधारणा को बढ़ाता नहीं, बल्कि उसे कम करता है। चाहे कितनी भी मनज़ावनी ज़्यों न हो, मरियम के आदि कुंवारी होने की तह या लपेटन को उतारना ही होगा।

टिप्पणियां

[1]गलातियों 4:4 में एक अप्रत्यक्ष हवाला है, जिसमें कहा गया है कि यीशु ''स्त्री से जन्मा।'' [2]इस दावे सहित कि मरियम यीशु के साथ सह-उद्धारकर्ज़ा थी और है, कई विश्वास पैदा हो रहे हैं। [3]''बुल'' पोप द्वारा जारी बुल्ला (*बुल्ला* ''मोहर'' के लिए लातीनी शब्द है) के साथ मोहर लगाकर जारी किए गए एक आधिकारिक दस्तावेज़ को कहते हैं। [4]हर नये विश्वास के बारे में यह दावा किया जाता है कि ''कलीसिया का *हमेशा से* यही विश्वास और शिक्षा है।'' यदि यह सही होता, तो हमारे पास पवित्र शास्त्र में और दूसरी व तीसरी शताब्दियों के लेखों में विश्वास की शिक्षा स्पष्ट होनी चाहिए थी, जो नहीं है। प्रत्येक मामले में, मैं ज़ोर दूंगा कि dogma (विश्वास) परमेश्वर की प्रेरणा से दिए गए वचन में नहीं मिलता (2 तीमुथियुस 3:16, 17)। लिखित वचन में हमें ''जीवन और भक्ति से सम्बन्ध'' रखने वाली सब बातें बताई गई हैं (2 पतरस 1:3)। [5]यदि कोई दावा करता है कि यीशु ने अपने जीवनकाल के दौरान ये बातें कहीं और यह कि मरियम बाद में स्वर्ग पर उठा ली गई, तो इन तथ्यों को दिखाएं: (1) यीशु की बातें भविष्यवाणी थीं। उसने भविष्यवाणी का भूतकाल में इस्तेमाल किया, जो भविष्य के लिए था। (2) यूहन्ना ने पहली सदी में 90 के दशक में अर्थात मरियम की मृत्यु के कई साल बाद यीशु की बातें दर्ज कीं। [6]''निष्पाप'' का अर्थ है ''पाप से शुद्ध; निष्कलंक; दाग या दोष से मुक्त; शुद्ध।'' [7]इसे कभी-कभी ''मरियम पूजा'' कहा जाता है। इसकी एक अभिव्यक्ति, 1955 में स्थापित मरियम के रानी होने का पर्व है। [8]यह दावा किया जाता है कि *वास्तव में* मरियम की उपासना और अर्चना नहीं की जाती। परमेश्वर की उपासना करने और मरियम की मूर्ति के आगे झुकने में अन्तर करने के लिए नये-नये शब्दों का आविष्कार किया जाता है। परन्तु कैथोलिक अधिकारियों तथा कैथोलिक विश्वासियों के लेखों और व्यवहार से तो यही पता चलता है कि मरियम की उपासना और अर्चना की जाती *है*, कहने को तो कोई जो भी कहे। [9]नये नियम में मरियम को ''प्रभु की माता'' (लूका 1:43) और ''यीशु की माता'' (यूहन्ना 2:1) कहा गया है, परन्तु परमेश्वर की माता कभी नहीं। यीशु की ईश्वरीयता अनन्तकालिक थी (यूहन्ना 1:1-3; इब्रानियों 1:10-12) और किसी भी तरह से मरियम के कारण नहीं थी। केवल प्रभु की शारीरिक देह ही मरियम की थी (रोमियों 1:3; देखें यूहन्ना

3:6)। [10]या "mediatrix" (मध्यस्थ के लिए "mediator" का स्त्रीलिंग रूप)।

[11]यह सञ्भव है कि यह विचार परमेश्वर की कठोर, कड़े और न्याय करने वाली अवधारणा के कारण बना। [12]यह भी दावा किया जाता है कि मरियम स्त्री है, इसलिए उसके प्रति अधिक सहानुभूति है। यह सही है कि परमेश्वर को हमेशा पुलिंग रूप में दिखाया गया है, परन्तु पवित्र शास्त्र सिखाता है कि उसमें नर और मादा दोनों के श्रेष्ठतम गुण हैं। वास्तव में, दोनों से अच्छे गुण हैं। यशायाह 49:15 पढ़ें। [13]अपने जीवन काल में, यीशु ने ज़ोर दिया कि आत्मिक सञ्बन्ध शारीरिक सञ्बन्धों से अधिक महत्वपूर्ण हैं, चाहे उसकी माता ही हो (मत्ती 12:47-50; लूका 11:27, 28)। [14]यहूदी नियम के अनुसार, विवाह तब तक पूर्ण नहीं होता था, जब तक शारीरिक सञ्बन्ध न हों। नया नियम सिखाता है कि विवाह में एक साथी दूसरे साथी से शारीरिक सञ्बन्ध से इन्कार न करे (1 कुरिन्थियों 7:3-5)। [15]यह वास्तव में सौतेले भाई-बहन थे, ज्योंकि उनकी माता (मरियम) तो एक ही थी परन्तु पिता एक नहीं था (यीशु का पिता परमेश्वर था, जबकि उनका पिता यूसुफ था)। [16]यह दावा किया जाता है कि यूसुफ के ये बच्चे उसकी पहले की शादी से हो सकते हैं या वे यीशु के रिश्ते के भाई-बहन होंगे। संदर्भ में ऐसा कोई सुझाव नहीं मिलता कि ये विकल्प हो सकते हैं। इस पर विचार करें: यदि यीशु के "भाई" यूसुफ की पहली किसी पत्नी से थे, तो उनमें से एक, यीशु नहीं, दाऊद के सिंहासन का कानूनी वारिस होना था।

यूसुफ पर प्रचार करना

यदि हमारे प्रचार व शिक्षा में मरियम को अनदेखा किया गया है, तो यूसुफ को उससे भी दोगुना अनदेखा किया गया है। यूसुफ पर संदेश देना आरज़्भ करने के लिए निज़्न दो बातें हैं:

संदेश आरज़्भ करने का #1:

आदमी जिसे परमेश्वर ने अपने पुत्र का पालन-पोषण करने के लिए चुना

कई बार जब पता नहीं चलता था कि आगे ज़्या होगा, मेरी पत्नी और मैं कुछ हो जाने पर अपनी लड़कियों को पालन-पोषण के लिए किसी के पास रखने का प्रबन्ध कर लेते थे। जैसे आप कल्पना कर सकते हैं, हम इस बात को बड़ी गज़्भीरता से लेते थे, अर्थात यह कि उस व्यज़्ति का चयन बहुत सोच समझकर और सावधानी से करते थे। अपने बच्चों का पालन-पोषण करने के लिए *आप* किसे पसन्द करेंगे? ऐसे व्यज़्ति में आप कैसे गुण चाहेंगे?

इस विचार को यूसुफ पर लागू करें और फिर यूसुफ के उन गुणों की सूची बनाएं, जो हम सब में होने चाहिए। आरज़्भ करने के लिए कुछ विचार इस प्रकार हैं: वह परमेश्वर की सन्तान (एक यहूदी) था; वह धर्मी था (मज़ी 1:19; दुख की बात है कि परमेश्वर के सब लोग धर्मी नहीं हैं); वह दूसरों को दुखी नहीं करना चाहता था (1:19); उसका विश्वास परमेश्वर में था (मान लिया जाए); और वह साहसी था (वह कायर नहीं था; देखें 1:20)। सबसे बढ़कर, वह आज्ञा मानने वाला था; जितनी बार परमेश्वर ने उससे बात की, उसने *तुरन्त* आज्ञा मानी।

यूसुफ के जीवन की समीक्षा और यीशु के साथ उसके सज़्बन्ध पर विचार करते हुए, बच्चों का पालन-पोषण करने के लिए पुराने नियम के निर्देशों को ध्यान में रखें। व्यवस्थाविवरण 6:6, 7, 20, 21 का अर्थ यह है कि बच्चों के प्रशिक्षण की मुज़्य ज़िज़्मेदारी *पिता* पर होती थी और आगे पुत्रों को सौंपी जाती थी।

संदेश आरज़्भ करने का #2:

आदमी जिसका जीवन बदल गया हो

''सो यूसुफ नींद से जागकर प्रभु के दूत की आज्ञा के अनुसार अपनी पत्नी को अपने यहां ले आया'' (मज़ी 1:24)। इस आदमी पर जो परमेश्वर की हर बात मानने से कभी हिचकिचाया नहीं, विचार करने के लिए कुछ समय निकालें। यह पूछने के लिए समय

निकालें कि ''यह आदमी कौन *था*?''

मरियम ने यूसुफ की पहचान को इतना ग्रहण लगा दिया है कि बहुत से लोगों के दिमाग में यीशु के प्रारज़्भिक जीवन के मंच पर यूसुफ की भूमिका केवल सराय के मालिक, चरवाहों और ज्योतिषियों जितनी ही लगती है। परन्तु वह अवश्य एक असाधारण व्यज़्ति होगा, वरना परमेश्वर उसे अपने पुत्र के पालन-पोषण की जिज़्मेदारी देने के लिए ज़्यों चुनता।[1] यूसुफ की विशेष योग्यताओं में से एक थी कि वह राजा दाऊद के वंश में से था। यहूदियों के लिए, शारीरिक से बढ़कर कानूनी तौर पर परिवार का इसका महत्व था। इसलिए यद्यपि यूसुफ यीशु का वास्तविक पिता नहीं था (लूका 3:23), परन्तु एक लेखक द्वारा यीशु की वंशावली उसी से दर्शायी गई (मज़ी 1:16)।

मैं यूसुफ को ''एक आदमी जिसका जीवन *बदल गया* था'' के रूप में देखता हूं: बदल गया इसलिए ज़्योंकि उसने मरियम से विवाह कर लिया था, बदल गया इसलिए ज़्योंकि यीशु नाम का एक बच्चा उसके जीवन में आया था।

यूसुफ के जीवन में आने वाले परिवर्तन

(1) *स्थान में परिवतन।* यूसुफ नासरत का एक सीधा सादा बढ़ई था (मज़ी 2:23; 13:55; लूका 2:4, 39)। मरियम को अपनी पत्नी के रूप में ले जाने से पहले, वह यरूशलेम से बाहर नहीं गया होगा (लूका 2:41)। उनके विवाह के शीघ्र बाद, रोमी सम्राट की आज्ञा के कारण उसे और उसकी नई दुल्हन को यरूशलेम के दक्षिण में बैतलहम में जाना पड़ा, जहां यीशु का जन्म हुआ (लूका 2:1-7)।

कुछ दिन बाद, वे उस नवजन्मे बालक को ''प्रभु के साज़्हने'' लाने के लिए यरूशलेम में लाए (लूका 2:21, 22)। फिर वे बैतलहम में लौट गए, जहां वे कुछ समय रहे, स्पष्टतया यूसुफ उस नगर में बढ़ई का काम करता रहा। उनके वहां रहने के दौरान ही, पूर्व से आए ज्योतिषियों ने ''उस घर में पहुंचकर उस बालक को उसकी माता मरियम के साथ'' पाया (मज़ी 2:11)।

उसके थोड़ी देर बाद, यूसुफ ने राजा के क्रोध से बचने के लिए अपने परिवार सहित मिस्र में जाने का सबसे लज़्बा सफर किया (मज़ी 2:1-18)। वहां वह, मरियम और यीशु राजा हेरोदेस के मरने तक पिरामिडों के देश में रहे। फिर परमेश्वर ने उन्हें पलिश्तीन में वापस बुला लिया (मज़ी 2:19-21)। बैतलहम में वापस जाने के बजाय वे नासरत में लौट गए, जहां से कई वर्ष पहले उनका सफर आरज़्भ हुआ था।

(2) *दायित्व में परिवर्तन।* क्षेत्र में यूसुफ के नाटकीय परिवर्तनों की तरह ज़िज़्मेदारी में उसका परिवर्तन और भी महत्वपूर्ण था। विवाह में मरियम के साथ मिलने से पहले उसके सबसे गज़्भीर निर्णय उपयुज़्त कार्य के लिए उपयुज़्त औज़ार या सही लकड़ी ढूंढना ही होता था। नासरत में मरियम का पति बनने के बाद, अचानक उस पर परिवार की ज़िज़्मेदारी आ पड़ी थी। बैतलहम में जाते हुए, उसने अवश्य ही हर विवेकी पिता की तरह नव जन्मे बालक को पहली बार देखने का अहसास किया होगा। जब स्वर्गदूत ने यूसुफ को मिस्र में चला जाने को,

तो उसने इस अनमोल बालक की रक्षा की ज़िम्मेदारी को समझा होगा। नासरत से लौटकर, उसने अपनी नई ज़िम्मेदारी का सबसे कठिन भाग आरम्भ किया: उस निराले को जिसे उसकी देखभाल में सौंपा गया था, दिन प्रतिदिन आकार देना था।

यहूदियों का विश्वास था कि ''अपने पुत्र को काम न सिखाने वाला आदमी उसे चोर बनना सिखाता है।'' यीशु के नन्हें हाथों से छोटी हथौड़ी हाथ में पकड़े ही यूसुफ ने उसे अपने साथ काम करने के लिए एक छोटी चौकी बना दी होगी (मरकुस 6:3)। परन्तु सबसे महत्वपूर्ण प्रशिक्षण आत्मिक प्रशिक्षण है। यीशु को पुराने नियम की महान कहानियां बताने के अलावा यूसुफ उसे आराधनालय की पाठशाला में भी ले जाता होगा (लूका 4:16)। मरियम के प्रयासों से मिलकर यूसुफ के प्रयास, स्पष्टतया सफल रहे थे; ज़्योंकि ''बालक बढ़ता, और बलवन्त होता, और बुद्धि से परिपूर्ण होता गया; और परमेश्वर का अनुग्रह उस पर था'' (लूका 2:40)।[2]

आपके जीवन में आने वाले परिवर्तन

आप उन जगहों पर जहां यूसुफ गया, जाएं या नहीं,[3] परन्तु आपके जीवन में परिवर्तन आवश्यक आएंगे।[4] परिवर्तन हमेशा सुखद नहीं होते, परन्तु हम चाहें या न परिवर्तन आते आवश्यक ही हैं।

अफ़सोस की बात है कि कुछ लोग इस बात का अहसास नहीं करते कि उनके जीवन में परितर्वनों की आवश्यकता है: वे बचकानी आदतों को बदले बिना वयस्क बनना चाहते हैं। वे अपना स्वार्थ त्यागे बिना विवाहित होना चाहते हैं। वे अपना व्यवहार बदले बिना माता-पिता बनना चाहते हैं।[5] यहां तक कि कई तो अपने मन और जीवन बदले बिना स्वर्ग मं जाना चाहते हैं।[6]

हर व्यक्ति के जीवन में परिवर्तन आवश्यक है-और सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन प्रभु के स्वरूप में बदलना है (2 कुरिन्थियों 3:18)। मसीही बनने के समय, हम ''नये जीवन'' में बपतिस्मे की पानी रूपी कब्र में से बाहर निकले हैं (रोमियों 6:4)। फिर हम ''नई सृष्टि'' के रूप में जीवन बिताते हैं (देखें 2 कुरिन्थियों 5:17)।[7]

सारांश

मैंने यूसुफ को एक ऐसा आदमी कहा है जिसका जीवन बदल गया था। हम सभी को ऐसे लोग होना चाहिए, जिनके जीवन प्रभु की सामर्थ से बदल गए हैं।

यूसुफ ने अपने जीवन में आने वाले परिवर्तनों को स्वीकार किया और उसने उन परिवर्तनों से आई जिम्मेदारियों को निभाने के लिए पूरी कोशिश की। परमेश्वर यूसुफ जैसे बनने में हम सब की सहायता करे, जिसने बिना हिचकिचाए, वही किया जो परमेश्वर ने उसे करने के लिए कहा![8]

टिप्पणियां

[1]परमेश्वर ने परिवार के आदमी को बच्चों का पालन-पोषण सही ढंग से करने की ज़िम्मेदारी दी (देखें इफिसियों 6:4)। [2]पाठ के इस भाग में, आप बारह वर्ष की आयु में यीशु के मन्दिर में रह जाने की कहानी संक्षेप में बता सकते हैं। इसी तरह, आपको यूसुफ के जीवन को संक्षेप में बताना है। आप संक्षेप में यह बता सकते हैं कि यूसुफ की मृत्यु स्पष्टतया यीशु की व्यक्तिगत सेवकाई के आरम्भ होने से पहले ही कहीं हो गई। परन्तु मरने से पहले उसने यीशु के लिए ईश्वरीय प्रशिक्षण देने का परमेश्वर द्वारा दिया गया कार्य पूरा किया। [3]अधिकतर अमेरिकी अपने जीवनों में कई जगह बदलते हैं। [4]बूढ़े होने, वयस्क होने, नई ज़िम्मेदारियां स्वीकार करने और ऐसी बातों पर अधिकतर लोगों के जीवनों में आने वाले परिवर्तनों की सूची बनाएं। [5]परिचय में कहा गया है कि यूसुफ के जीवन में परिवर्तन इसलिए हुआ क्योंकि उसने मरियम से विवाह किया और यीशु नामक बालक उसके जीवन में आया। विवाह करने और बच्चे होने पर हमारे जीवनों में आने वाले परिवर्तनों के साथ इसकी तुलना की जा सकती है-यदि हम इनके साथ परमेश्वर द्वारा दी गई ज़िम्मेदारियों को स्वीकार करें। [6]मन फिराव के लिए (लूका 13:3; प्रेरितों 2:38; 17:30) है कि उद्धार पाने के लिए हमारे मन और जीवन दोनों में परिवर्तन होना आवश्यक है। [7]इस विचार को विस्तार दिया जा सकता है। [8]पाठ में यहां पर सुसमाचार के तुरन्त आज्ञापालन के लिए कहना एक तर्कसंगत होगा (प्रेरितों 2:37, 38, 41)।

मसीह का जन्म कब हुआ था?

वर्ष

छठी शताब्दी के एक भिक्षु, डायोनिसियुस एग्ज़िज्यूस ने सबसे पहले यह सुझाव दिया था कि तथाकथित मसीही जगत मसीह के जन्म से ही सब घटनाओं को तय करे। उसने यीशु के जन्म का सही-सही वर्ष सैट कर दिया। लगभग 525 ईस्वी में (जैसे हम समय की गणना करते हैं), उसने घोषणा की कि मसीह का जन्म रोमी इतिहास के 753 वर्ष में हुआ था। कई साल बाद यह पता चला कि उसने चार-पांच वर्ष की गलती की थी, परन्तु संसार के रिकॉर्ड में कोई परिवर्तन न करने का निर्णय लिया गया। इस प्रकार हमें मसीह के जन्म के कई वर्षों ''ई.पू.'' (''ईसा पूर्व'' या मसीह से पहले) की अनियमितता मिलती है!

बाइबल यीशु के जन्म का सही-सही समय नहीं बताती, परन्तु पवित्र शास्त्र में दी गई जानकारी हमें उस वर्ष का अनुमान लगाने की अनुमति अवश्य देती है:[1]

(1) ऐतिहासिक तथ्यों से संकेत मिलता है कि हेरोदेस महान की मृत्यु 750 के बसन्त के प्रारम्भ में (रोमी कैलेण्डर की गणना के अनुसार) हुई थी। यीशु का जन्म इससे छह माह से एक वर्ष पूर्व हुआ था[2]-जो 749 में होगा (डायोनिसियुस एग्ज़िज्यूस की गणना से चार वर्ष पूर्व)।

(2) लूका ने लिखा है कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने अपनी सार्वजनिक सेवकाई ''तिबिरियुस कैसर के राज्य के पंद्रहवें वर्ष में'' आरम्भ की (लूका 3:1क)। यह मानते हुए कि लूका ने तिबिरियुस के शासन के आरम्भ के लिए 765 का,[3] और यह मानते हुए कि सेवकाई आरम्भ करने के समय यूहन्ना की आयु तीस वर्ष थी,[4] यह अर्थ निकलेगा कि यूहन्ना का जन्म 750 में और यीशु का जन्म इसके छह महीने बाद हुआ था।

(3) यीशु की सार्वजनिक सेवकाई के पहले फसह के दौरान, यह कहा गया था कि लोगों ने छयालीस वर्ष पूर्व हेरोदेस का मन्दिर बनाना आरम्भ किया था (देखें यूहन्ना 2:20)। उपलब्ध इतिहास से संकेत मिलता है कि हेरोदेस ने यह कार्य 735 में आरम्भ किया था, जिससे यूहन्ना 2 अध्याय की घटनाएं 781 में हुई मिलेंगी। यह मान लें कि यह पहला फसह यीशु के जीवन के इक्कतीसवें वर्ष में आया, उसका जन्म लगभग 750 में हुआ होगा।

इन सभी तथ्यों को ध्यान में रखते हुए, हम आसानी से कह सकते हैं कि यीशु का

जन्म रोमी कैलेण्डर के अनुसार 750 या 749 में–अन्य शब्दों में, 4 या 5 ई.पू. में हुआ था।

वर्ष का समय

मसीहियत के आरम्भ की अगली सदियों में, लोगों ने यीशु के जन्म के लिए जनवरी 5, अप्रैल 20, मई 20 और दिसम्बर 25 सहित कई तिथियां ठहराई हैं। डी. जॉर्ज वैंडरलिप ने कहा था:

> यीशु के जन्म के महीने का पता नहीं है। चौथी शताब्दी के आरम्भ होने से पहले यीशु के जन्म के याद रखने के लिए कलीसिया का कोई पर्व नहीं होता था। 25 दिसम्बर की तिथि मसीही लोगों को मूर्तिपूजक रोमी त्यौहार, सैटरनेलिया की जगह देने के लिए चुनी गई थी, जो रोमी देवता सैटर्न (शनि) के सम्मान में मनाया जाता था।[5]

यीशु के जन्म के बारे में वर्ष के समय पर विद्वान एक ही बात पर सहमत हैं कि यह समय शीतकाल नहीं होता था। ए. टी. रॉबर्टसन ने लिखा है:

> मुख्य बात जो सिद्ध होती लगती है, वह यह है कि यह समय 25 दिसम्बर नहीं है, क्योंकि चरवाहे झुंड के साथ रात को खेतों में मुश्किल से ही रहते होंगे, जो कि नवम्बर में बाड़ों में ले जाए जाते थे और मार्च तक उन्हें वहीं रखा जाता था। दिसम्बर की रातों में पहाड़ी खेतों में और दक्षिण में बैतलहम तक निगरानी करना कठिन था। इसके अलावा, यूसुफ और मरियम सर्दियों में, बरसात में नासरत से बैतलहम मुश्किल ही गए हो सकते हैं।[6]

एच. आई. हेस्टर सहमत था कि यीशु का जन्म "मध्यशीतकाल में होना कठिन था क्योंकि चरवाहे शीत ऋतु में रात के समय अपने झुंड पहाड़ियों पर नहीं रखते थे। यह गर्मियों के अन्त या पतझड़ से पहले का समय हो सकता है।"[7]

यह तथ्य कि बाइबल यीशु के जन्म का सही-सही समय नहीं बताती इस बात का संकेत है कि इतनी बारीकी में जाने की आवश्यकता नहीं है। यह जानना कि उसका जन्म हुआ *था* यह जानने से अधिक महत्वपूर्ण है कि उसका जन्म *कब* हुआ था।

टिप्पणियां

[1] "पहली नाम लिखाई ... जब क्विरिनियुस सूरिया का हाकिम था" (लूका 2:2) का लूका का कथन इस सूची में शामिल नहीं किया गया। यह घटना पहली सदी के पाठकों के लिए विशेष थी; परन्तु हमारे लिए नहीं है, क्योंकि इस जनगणना पर ऐतिहासिक जानकारी कुछ-कुछ अस्पष्ट है। अब विद्वान सामान्यतया इस बात पर सहमत हैं कि ऐसी कोई जनगणना हुई थी, परन्तु वे इस पर सहमत नहीं हैं कि यह गणना कब हुई

थी। [2]''उद्धारकर्ज़ा को ढूंढ़ना'' पाठ देखें। [3]765 में तिबिरियुस ने अगस्तुत कैसर के साथ दो वर्ष का शासन आरज़्भ किया। [4]यूहन्ना याजकों के परिवार से था (लूका 1:5), और याजक अपनी सेवा तीस वर्ष की आयु में आरज़्भ करते थे (गिनती 4:3)। यह इस तथ्य से मेल खाता है कि यूहन्ना ने अपनी सेवकाई यीशु के ''लगभग तीस वर्ष की आयु'' (लूका 3:23) में सेवकाई आरज़्भ करने से थोड़ा पहले शुरू की थी। [5]डी. जॉर्ज वैंडरलिप, *जीजस ऑफ़ नाज़रथ, टीचर एण्ड लॉर्ड* (वैली फोर्ज, पैनसिलवेनिया: जुडसन प्रैस, 1994), 67. [6]ए. टी. रॉबर्टसन *ए हारमनी ऑफ़ द गॉस्पल्स फ़ॉर स्टूडेंट्स ऑफ़ द लाइ़फ ऑफ़ क्राइस्ट* (न्यू यॉर्क: हार्पर एण्ड रोअ, 1950), 267. [7]एच. आई. हेस्टर, *द हार्ट ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट* (लिबर्टी, मिज़ोरी: ज़्वालिटी प्रैस, 1963), 99.

सर्व-पर्याप्त मसीह

मसीह सर्व-पर्याप्त है।

कलाकार के लिए-वह कुल मिलाकर सुन्दर है (श्रेष्ठगीत 5:16)।
वास्तुकार के लिए-वह कोने के सिरे का मुख्य पत्थर है (1 पतरस 2:6)।
रोटी बनाने वाले के लिए-वह जीवित रोटी है (यूहन्ना 6:51)।
मकान बनाने वाले के लिए-वह पक्की नींव है (यशायाह 28:16; 1 कुरिन्थियों 3:11)।
बढ़ई के लिए-वह द्वार है (यूहन्ना 10:9)।
डॉक्टर के लिए-वह महान चिकित्सक है (मरकुस 2:17)।
बिजली के मिस्त्री के लिए-वह जगत की ज्योति है (यूहन्ना 8:12)।
किसान के लिए-वह बीज बोने वाला और खेत का स्वामी है (मत्ती 13:37; लूका 10:2)।
निवेशक के लिए-वह अगम्य धन है (इफिसियों 3:8)।
जौहरी के लिए-वह बहुमूल्य जीवित पत्थर है (1 पतरस 2:4)।
वकील के लिए-वह सलाहकार, और व्यवस्था देने वाला और सहायक है (यशायाह 9:6; 1 यूहन्ना 2:1)।
पत्रकार के लिए-वह बड़े आनन्द का समाचार है (लूका 2:10)।
प्रचारक के लिए-वह परमेश्वर का वचन है (यूहन्ना 1:1)।
सेवक के लिए-वह अच्छा स्वामी है (मत्ती 25:21, 23)।
श्रमिक के लिए-वह विश्राम देने वाला है (मत्ती 11:28)।
घूमने वाले के लिए-वह मार्ग है (यूहन्ना 14:6)।

लियोनार्ड वी. बुशमैन से लिया गया

मसीह की व्यक्तिगत सेवकाई कितनी देर की थी?

प्राय: कहा जाता है कि यीशु की सेवकाई साढ़े तीन वर्ष की थी। यह इस तथ्य पर आधारित एक अनुमान है कि बहुत से लोगों का मानना है कि यूहन्ना की पुस्तक चार फसहों का उल्लेख है। यूहन्ना निश्चित तौर पर तीन फसहों का उल्लेख करता है: 2:13; 6:4; 13:1. चौथा हवाला ''यहूदियों का एक पर्व'' का है (5:1), जो फसह हो भी सकता है और नहीं भी। इसके फसह होने के पक्ष में अलग अलग व्याख्याएं दी गई हैं,[1] जिसमें यह तथ्य भी शामिल है कि यदि यीशु की सेवकाई तीन से कम वर्ष की थी तो यह सब घटनाएं उसकी सेवकाई में शामिल होनी कठिन हैं। बेशक यह सम्भव है कि यीशु की सेवकाई में और फसह हो सकते हैं, जिनका उल्लेख यूहन्ना ने नहीं किया और यह कि उसकी सेवकाई चार या इससे अधिक वर्ष हो सकती है।

यीशु की व्यक्तिगत सेवकाई के सही-सही समय का इतना महत्व नहीं है; यदि होता, तो परमेश्वर उसे प्रकट कर देता। इसका उल्लेख केवल आपको ज़ोर देकर यह कहने की घबराहट से बचाने की सहायता के लिए किया गया है कि ''यीशु की सेवकाई साढ़े तीन वर्ष थी'' जबकि पवित्र शास्त्र ऐसा कुछ नहीं कहता। ए. टी. रॉबर्टसन ने लिखा है, ''हम केवल इतना ही कह सकते हैं कि हम जानते हैं कि यीशु की सेवकाई [कम से कम] साढ़े तीन की सम्भावना के साथ अढ़ाई वर्ष तक थी।''[2]

टिप्पणियां

[1]ए. टी. रॉबर्टसन, *ए हार्मनी ऑफ़ द गॉस्पल्स फॉर स्टूडेंट्स ऑफ़ द लाईफ़ ऑफ़ क्राइस्ट* (न्यू यॉर्क: हार्पर एण्ड रोअ, 1950), 269-70. [2]वहीं, 270.

''स्वर्ग का राज्य''

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला और यीशु दोनों ही यह प्रचार करते हुए आए कि ''स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है'' (मत्ती 3:2; 4:17; 10:7)। मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना में ''राज्य'' शब्द एक सौ से अधिक बार किया गया है।[1] इन चारों पुस्तकों में यह एक मुख्य विषय है।

यूनानी शब्द जिसका अनुवाद ''राज्य'' किया गया है ''सर्वसत्ता और शासन'' का सुझाव देता है कि सुसमाचार के वृत्तांतों में, मुख्यतया इसका अर्थ वह क्षेत्र है, जिस पर *प्रभु* शासन करता है।

पूरे नये नियम में ''राज्य'' शब्द मिलता है (रोमियों 14:17; 1 कुरिन्थियों 4:20), परन्तु मुख्यतया इसका इस्तेमाल मसीह की निजी सेवकाई के दौरान हुआ। सदियों से, यहूदी लोग एक राजा (मसीहा) की राह देख रहे थे, जिसने आकर अपना राज्य स्थापित करना था।

परन्तु मसीहा के राज्य की यहूदियों की अवधारणा गलत थी। उनके दिमाग में एक सांसारिक, राजनैतिक शासन था। यीशु ने कहा कि उसका राज्य ''इस जगत का नहीं'' है (यूहन्ना 18:36)। उसके अधिकतर दृष्टांत राज्य के आत्मिक स्वभाव को समझाने के लिए बनाए गए, राज्य के दृष्टांत[2] ही थे।

सुसमाचार के वृत्तातों में राज्य के लिए कई शब्दों का इस्तेमाल किया गया है। सबसे प्रचलित ''परमेश्वर का राज्य'' (मत्ती 19:24; मरकुस 4:26) शब्द पचास से अधिक बार मिलता है। मत्ती का पसन्दीदा शब्द ''स्वर्ग का राज्य'' था (मत्ती 5:3, 10, 19)। अकेले उसी ने इस वाक्यांश का इस्तेमाल तीस से अधिक बार किया। यीशु इस शब्द का इस्तेमाल ''मेरा राज्य'' (लूका 22:30; यूहन्ना 18:36) और ''मेरे पिता का राज्य'' (मत्ती 26:29) जैसे शब्दों के साथ करता था। कई बार केवल ''राज्य'' शब्दों का ही इस्तेमाल किया गया (मत्ती 4:23; 13:19)।

कुछ लोग ''परमेश्वर का राज्य'' और ''स्वर्ग का राज्य'' में अन्तर करने का प्रयास करते हैं, परन्तु उनकी कोशिशों से कोई फर्क नहीं पड़ता। जॉन कार्टर ने लिखा है, ''मझे, उनके अर्थ में बताए गए अन्तरों के सभी प्रयासों से तनाव होता है, और जिस अन्तर का दावा किया गया है वह बनावटी लगता है।''[3] मत्ती 19:23, 24 में, दो वाक्यांशों का इस्तेमाल एक दूसरे के स्थान पर किया गया है:

> तब यीशु ने अपने चेलों से कहा, मैं तुम से सच कहता हूं, कि धनवान का

स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना कठिन है। फिर तुम से कहता हूं, कि *परमेश्वर के राज्य* में धनवान के प्रवेश करने से ऊंट का सूई के नाके में से निकल जाना सहज है।

आठ समानान्तर पदों में, मत्ती ने ''स्वर्ग का राज्य'' दिया है, जबकि अन्य संक्षिप्त विवरणों में ''परमेश्वर का राज्य'' है। (उदाहरण के लिए, मरकुस 1:14, 15 के साथ मत्ती 4:17 की तुलना करें।)

नये नियम में, ''राज्य'' शब्द का इस्तेमाल कई तरह से हुआ है।[4] कभी-कभी इसका इस्तेमाल स्वर्ग के अर्थ में हुआ है (देखें प्रेरितों 14:22; 2 पतरस 1:11)। अधिकतर इसका संकेत उन लोगों की ओर होता है जिन्होंने राजाओं के राजा के शासन के अधीन स्वेच्छा से अपने आप को कर दिया है, जो प्रभु को अपने मनों पर राज करने देते हैं।[5]

पत्रियों में, राज्य की प्रजा को ''कलीसिया'' कहा गया है। सुसमाचार के वृत्तांतों में ''राज्य'' शब्द को प्राथमिकता दी गई हो सकती है, परन्तु पत्रियों में ''राज्य'' शब्द को प्राथमिकता है। ''राज्य'' और ''कलीसिया'' दो अलग अलग नहीं, बल्कि एक ही आत्मिक संस्थान है। मत्ती 16:18, 19 में यीशु ने अपने राज्य की बात करते हुए इसे ''अपनी कलीसिया'' कहा।

मसीह के राज्य/कलीसिया का आरम्भ मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने के बाद आने वाले पहले पिन्तेकुस्त के दिन हुआ था (देखें मरकुस 9:1; प्रेरितों 1:6-8; 2:1-4)। उस अवसर के बाद राज्य/कलीसिया को वर्तमान में ही दिखाया गया है (प्रेरितों 5:11; 8:1, 3; कुलुस्सियों 1:13; इब्रानियों 12:28; प्रकाशितवाक्य 1:6)।

कुछ लोग यह सिखाते हैं कि राज्य अभी स्थापित नहीं हुआ है। लगभग दो हज़ार साल पहले यूहन्ना और यीशु दोनों ने बताया था कि राज्य ''निकट'' आ गया (अर्थात, ''लगभग आ ही गया'') है। इसके अलावा यीशु ने सिखाया कि राज्य उसके सुनने वालों में से कुछ के जीवनकाल में ही आना था (मरकुस 9:1)। बाइबल यह नहीं सिखाती कि राज्य अभी भविष्य में आने वाला है, बल्कि यह सिखाती है कि परमेश्वर के पास ऊपर उठाये जाने के समय मसीह शासन करने लगा था (प्रेरितों 2:29-36)। मसीह अब स्वर्ग में अपने राज्य पर शासन कर रहा है और तब तक वह शासन करता रहेगा जब तक इस युग के अन्त में अपने विश्वासियों को अपने साथ स्वर्ग में ले जाने के लिए (यूहन्ना 14:1-3) वापस नहीं आ जाता (1 कुरिन्थियों 15:24-27)।

यद्यपि प्रेरितों के काम 2 अध्याय में कलीसिया/राज्य की स्थापना के बाद ''राज्य'' से अधिक ''कलीसिया'' का इस्तेमाल किया गया है, परन्तु यह तथ्य मन से न निकालें कि प्रभु की कलीसिया ही राज्य है। मसीह के जीवन का अध्ययन जारी रखते हुए हम ''राज्य'' शब्द को देखते हैं। इस शब्द का इस्तेमाल करने वाले पदों से आपको पता चलेगा कि पवित्र व्यवहार और भक्ति में आपको कैसे लोग होना चाहिए।[6]

टिप्पणियां

[1]अलग-अलग स्रोतों की संज्या अलग-अलग है। [2]यीशु के बहुत से दृष्टांतों का आरज़्भ, ''स्वर्ग का राज्य ... के समान है'' से होता है (उदाहरण के लिए, देखें मज़ी 13:31, 33, 44, 45, 47, 52)। [3]जॉन फ्रैंज़्लिन कार्टर, *ए लेयमैन'स हारमनी ऑफ़ द गॉस्पल्स* (नैशविल्ले: ब्रोड मैन प्रैस, 1961), 55. [4]उदाहरण के लिए, ''राज्य'' शज़्द का अर्थ किसी राज्य (मज़ी 12:25), शैतान के राज्य (मज़ी 12:26), इस्राएल के राज्य (मज़ी 8:12; पुराने नियम के समयों में, इस्राएली कौम परमेश्वर का चुना हुआ राज्य था); सामान्य तौर पर परमेश्वर का विशेष राज्य था (मज़ी 6:13)। इन सभी मामलों में, ''राज्य'' का मूल अर्थ ''शासन'' करना है। [5]''राज्य'' शज़्द का कई तरह से इस्तेमाल किया जा रहा था, तो कोई दिए गए पद में इसका अर्थ कैसे जान सकता है? *संदर्भ को देखें।* [6]यह वाज़्यांश 2 पतरस 3:11 से लिया गया है।

परमेश्वर के राज्य के लोग बनने का ढंग

''राज्य'' शब्द का भविष्यवाणी युक्त अर्थ उन लोगों पर जिन्होंने संसार के लिए परमेश्वर की इच्छा के प्रति समर्पण कर दिया है उसका आत्मिक शासन है। यह एक शासन या क्षेत्र की बात है जो जीवन पर परमेश्वर का आत्मिक शासन, और वह आत्मिक क्षेत्र है जहां परमेश्वर का शासन दिखाई देता है। ''कलीसिया'' शब्द में राजा के रूप में मसीह के शासन करने की बात शामिल है। मसीह की इच्छा के प्रति समर्पित होने वाले व्यक्ति को मसीह की देह अर्थात उसकी कलीसिया में लाया जाता है। कलीसिया के सिर अर्थात मसीह यीशु को समर्पित होकर जीवन बिताते हुए वह पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य के भाग के रूप में रहता है। ''परमेश्वर का राज्य'' और ''मसीह की कलीसिया'' ऐसे शब्द हैं जिन्हें एक दूसरे के स्थान पर इस्तेमाल किया जा सकता है, जैसा कि मत्ती 16:18, 19 से पता चलता है।

अपनी इच्छा को राजा की इच्छा के सामने झुकाकर आप परमेश्वर के राज्य के लोग या नागरिक बन सकते हैं। मसीह ने कहा था, ''जो मुझ से, हे प्रभु हे प्रभु कहता है, उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है'' (मत्ती 7:21)। राज्य की नागरिकता के लिए शर्तें तय करने का अधिकार किसी मनुष्य को नहीं है; केवल प्रभु को ही यह अधिकार है। फिर, यीशु ने कहा, ''मैं तुझ से सच सच कहता हूं, यदि कोई नये सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता'' (यूहन्ना 3:3)। प्रेरित पतरस ने ज़ोर देकर कहा कि परमेश्वर के वचन के द्वारा उस वचन की सच्चाई की बात मान लेने पर हमारा ''नया जन्म'' होता है (1 पतरस 1:22, 23)।

आत्मा की प्रेरणा से दिया गया वचन (2 पतरस 1:21) हमें यीशु में विश्वास करने, अपने पापों से मन फिराने, अपने विश्वास का अंगीकार करने, और बपतिस्मा (पानी में डुबकी) लेने के लिए कहता है (यूहन्ना 3:16; लूका 13:3; मत्ती 10:32; मरकुस 16:16)। राजा की आज्ञाएं मानकर, हम ''जल और आत्मा से जन्म'' लेते हैं (यूहन्ना 3:5) और हमें अन्धकार में से उसके पुत्र के राज्य में भेज दिया जाता है (कुलुस्सियों 1:13)।

परमेश्वर के राज्य के लोगों के रूप में, हमारी मान्यताएं बदल जाती हैं। हम संसार को वैसे नहीं देखते जैसे संसार के लोग देखते हैं। हम ''संसार में'' तो हैं पर ''संसार के'' नहीं (यूहन्ना 17:11, 14)। जो लोग केवल इस संसार के हैं उन्हें अपनी सज़्पज़ि, अपने

वर्तमान, अपने भविष्य और सांसारिक मामलों की चिंता रहती है। मसीही लोग इस संसार के नहीं हैं ज़्योंकि हम भौतिक नहीं बल्कि आत्मिक संसार के लोग हैं। हमारा समर्पण सांसारिक नहीं बल्कि आत्मिक है। हम बीमारों की सेवा करते, भूखों को खाना खिलाते, और रहने के लिए संसार को एक बेहतर जगह बनाने के लिए काम तो करते हैं, पर हमारे मन की वास्तविक इच्छा अनन्तकालिक है। हम अन्य किसी भी प्रकार के विचार से ऊपर उठकर हम से मिलने वाले हर व्यज़्ति के आत्मिक उद्धार की इच्छा करते हैं। हमारे उद्देश्य आत्मिक हैं, सांसारिक नहीं। इस संसार के लोग नई चीज़ें खरीदते और बेचते हैं जबकि मसीही लोग नई आत्माओं को ढूंढ़ते हैं। अनन्तकाल की ऐनक से इस जीवन की बातों को देखकर हम उन्हें व्यर्थ पाते हैं।

ज़्या आप परमेश्वर के राज्य के नागरिक हैं? ज़्या आप उस राज्य के नागरिक के रूप में *रह रहे* हैं?

नया जन्म

''कुछ लोग एक बार पैदा होते हैं और दो बार मरेंगे। दूसरे दो बार पैदा होते हैं और एक ही बार मरेंगे।'' इस पहेली का अर्थ यूहन्ना 3:1-9 में निकुदेमुस के साथ यीशु के वार्तालाप में स्पष्ट होता है, जहां प्रभु ने ''नये जन्म'' की बात की है।

जब यीशु ने कहा कि हमारे लिए ''नये सिरे से जन्म लेना'' आवश्यक है, तो वह प्रतीकात्मक भाषा का इस्तेमाल कर रहा था। बाद में उसने अपने चेलों से कहा, ''मैं ने ये बातें तुम से दृष्टान्तों में कही हैं, परन्तु वह समय आया है, कि मैं तुम से दृष्टान्तों में और फिर नहीं कहूंगा, परन्तु खोलकर तुझ्हें पिता के विषय में बताऊंगा'' (यूहन्ना 16:25)। ग्रेट कमीशन में उद्धार की अपनी शर्तों को शामिल करते हुए, मसीह ने ''नये सिरे से जन्म'' लेने की बात नहीं कही, बल्कि ''स्पष्ट'' कह दिया कि ''जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा'' (मरकुस 16:16क; मत्ती 28:19 भी देखें)। प्रभु द्वारा सुसमाचार का पहला संदेश देने के लिए पतरस को प्रेरित करने पर उस प्रेरित ने ''नये सिरे से जन्म लेना'' का प्रचार नहीं किया था। उसने भी ''स्पष्ट'' कहा था कि ''मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले'' (प्रेरितों 2:38)। पतरस की बातों को सुनकर उसके वचन को मानने वालों (प्रेरितों 2:41) का ''नये सिरे से जन्म'' हुआ था? हां। बाद में प्रेरितों ने लिखा, ''... तुम ने ... सत्य के मानने से अपने मनों को पवित्र किया है, ... ज़्योंकि तुमने नाशमान नहीं पर अविनाशी बीज से परमेश्वर के जीवते और सदा ठहरने वाले वचन के द्वारा नया जन्म पाया है'' (1 पतरस 1:22, 23)। ''नया जन्म'' वाज़्यांश का इस्तेमाल विश्वास और आज्ञापालन के द्वारा मसीही बनने की बात कहने का दूसरा ढंग है।

परन्तु हमें केवल यह कहकर कि ''यह केवल मसीही बनने की बात कहने का दूसरा ढंग है,'' ''नया जन्म'' की यीशु की आज्ञा को खारिज नहीं कर देना चाहिए। नये जन्म का उदाहरण उस *नाटकीय परिवर्तन* पर ज़ोर देता है, जो परमेश्वर की सन्तान बनने वाले व्यज़्ति के जीवन में होना आवश्यकता है। इस परिवर्तन पर यूहन्ना अपनी पहली पत्री में ज़ोर दिया है। यूहन्ना ने लिखा है कि जो परमेश्वर से ''जन्मा है'' वह धर्म के काम करता है (1 यूहन्ना 2:29), पापपूर्ण जीवन शैली से दूर रहता है (3:9, 10), दूसरों से प्रेम करता है (4:7), और यीशु में विश्वास रखता है (5:1-5)। इन विशेषताओं को देखकर यह पूछना कि ''*ज़्या* मेरा सचमुच में 'नया जन्म' हुआ है?'' महत्वपूर्ण है।

आइए इस लेख के आरज़्भ में प्रस्तावित पहेली पर वापस जाते हैं: ''कुछ लोग एक

बार पैदा होते हैं पर मरेंगे दो बार।'' ये लोग शारीरिक तौर पर पैदा होते हैं, परन्तु उन्होंने आत्मिक तौर पर नये सिरे से जन्म नहीं लिया है। इसलिए दुख की बात है कि शारीरिक मृत्यु के बाद, वे नरक में ''दूसरी मृत्यु'' सहेंगे (प्रकाशितवाज़्य 20:14; 21:8)। ''दूसरे हैं, जो दो बार पैदा होते हैं और मरेंगे केवल एक बार।'' वे लोग ''नये सिरे से जन्म'' लेने वाले हैं, जो मसीही बनते हैं। यदि वे मरने तक वफ़ादार रहें (प्रकाशितवाज़्य 2:10), तो उनको ''दूसरी मृत्यु से हानि न पहुंचेगी'' (आयत 11)। ज़्या *आपने* ''नये सिरे से जन्म'' ले लिया है?